प्रेम से भरा परोपकार

यीशु मसीह में परिवर्तित होने वाले उन लोगों में दूसरे लोगों के प्रति परोपकार तथा दूसरों की चिन्ता करना पूर्ण रूप से नया था। यहूदियों को इब्रानी जाति के अन्दर एक दूसरे की चिन्ता करना सिखाया जाता था, परन्तु अन्यजातियों के प्रति उनका व्यवहार ऐसा नहीं था। डाकुओं द्वारा घायल यहूदी व्यक्ति के प्रति सामरी आदमी के परोपकारी कार्यों की यीशु की कहानी (लूका 10:25-37) दूसरी जातियों के प्रति यहूदियों की सोच के विषय में बताती है।

गैर यहूदी लोग मानवीय जीवन की परवाह बहुत कम करते थे। कोई जितना बड़ा मूर्तिपूजक होता था, उतना ही वह मनुष्य जीवन का कम सम्मान करता था। कई गैर यहूदी लोग मूर्तियों के सामने अपने बच्चों की बलि तक चढ़ा देते थे, जीव जन्तुओं को देवता मानते थे, नाशवान मनुष्य की पूजा करते थे, और नदियों और पहाड़ों की महिमा करते थे। झूठी आराधना के इन रूपों ने एक ही सच्चे परमेश्वर के स्वरूप पर बनाए गए मानवीय जीवन का सम्मान कम कर दिया था।

यीशु ने यहूदियों को मसीही ट्रेडमार्क बनने वाली एक नई आज्ञा "एक दूसरे से प्रेम रखो" (यूहन्ना 13:34, 35) देकर उन्हें अपने व्यवहार को बदलने की चुनौती दी थी। उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे परमेश्वर से प्रेम के साथ-साथ अपने पड़ोसी से भी प्रेम रखें (मत्ती 22:37-39)। यीशु ने उन्हें अपने शत्रुओं से भी प्रेम रखने की चुनौती दी (मत्ती 5:43-48)।

मसीह की आत्मिक देह के रूप में, कलीसिया ने अपने सिर की अगुआई में चलना था (कुलुस्सियों 1:18); इसलिए, प्रेरितों के काम में आरम्भ होने वाले भाईचारे के प्रेम के बारे में प्रभु की शिक्षाओं की एक नई आत्मिक आर्थिकता की अपेक्षा थी। इस भाईचारे के प्रेम में परोपकार स्वरूप की जाने वाली देखभाल की छूट नहीं थी।

पहली घटना: एक ज़रूरतमंद कलीसिया

प्रेरितों 2:41 और 4:4 के अनुसार, प्रेरितों 2:9-11 में उल्लेखित पन्द्रह देशों से आने वाले हज़ारों मसीहियों को प्रेरितों 1:15 वाले 120 चेलों और प्रेरितों में मिला लिया गया था। ये लोग यरूशलेम में अपनी पूर्व योजना से अधिक समय तक रुके रहे, और उन्हें भोजन तथा अन्य वस्तुओं की जरूरत पड़ी। पूर्वानुमान से अधिक देर तक यरूशलेम में ठहरने के साथ, निस्संदेह उन नये चेलों के मसीही बन जाने के कारण अपने परिवारों

के बहिष्कार का सामना भी करना पड़ा। बहुतेरों ने अपनी सम्पत्तियां बेच दी थीं और उससे मिला धन ''प्रेरितों के चरणों'' में लाकर रख दिया था (प्रेरितों 4:35)। ''प्रेरितों के चरणों'' लूका का उस समूह के वित्तीय कोष की व्याख्या का ढंग था। आज हम उसे कलीसिया का भण्डार या बैंक खाता कह सकते हैं। वितरण सभी जरूरतमंदों में होना था (प्रेरितों 2:44, 45)।

इस स्थिति को परिभाषित करने में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। कई लोग दावा करते हैं कि यरूशलेम के मसीहियों ने एक समाज बना लिया था जिसकी सारी सम्पत्तियां उस समूह की थीं और कोई भी सम्पत्ति किसी निजी व्यक्ति या परिवार की नहीं थी। इस प्रकार के प्रबन्ध में, सभी सम्पत्तियां कलीसिया की होनी चाहिए और सभी खर्चे उस समूह द्वारा वहन किए जाने चाहिए।

परन्तु, यह लूका की व्याख्या के अनुकूल नहीं है। बेशक इन मसीहियों की ''सब वस्तुएं साझे की थीं'' (प्रेरितों 2:44), वे ''अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच'' कर ''उनको सबके साथ बांटते थे'' (प्रेरितों 2:45), परन्तु उनका बेचना और बांटना ''जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी'' उसके अनुसार ही होता था (प्रेरितों 2:45)। बहुत से लोग भूल जाते हैं कि जब आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं, तो बेचना और बांटना बन्द हो जाता है। यरूशलेम के इन नागरिकों ने अपनी व्यक्तिगत सम्पत्तियां छोड़ी नहीं थीं, बल्कि उन्होंने *आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए* बलिदानपूर्वक दान दिया था। वितरण की प्रक्रिया में भी यही सिद्धांत अपनाया गया। सम्पत्तियों के बदले प्राप्त धन को ''प्रेरितों के चरणों'' में रखने के बाद, ''जैसी जिसे आवश्यकता होती थी'' बांट दिया जाता था (प्रेरितों 4:35)। जब आवश्यकताएं पूरी हो गईं और भेदभाव की बात न रही, तो मसीही लोगों ने अपनी सम्पत्तियां बेचकर धन लाना बन्द कर दिया। जब आवश्यकताएं पूरी हो गईं, तो सम्पत्तियों को बेचना भी बन्द कर दिया गया।

प्रेरितों के काम में बाद में भी यरूशलेम के मसीहियों के पास अभी तक अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति थी। हनन्याह और सफीरा ने अभी अपनी सम्पत्ति नहीं बेची थी, बल्कि वे बेचने की तैयारी में थे (प्रेरितों 5:4)। फिर, पतरस ने उन्हें बताया कि वे अपनी सम्पत्ति अपने पास रखकर भी परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते थे (प्रेरितों 5:4)। चमड़े का व्यवसाय करने वाले शमौन नामक एक और व्यक्ति के पास याफा में निजी सम्पत्ति थी (प्रेरितों 9:43; 10:6), जहां उसने पतरस को ठहरने के लिए निमन्त्रण दिया था। यूहन्ना मरकुस की माता मरियम ने अपना घर नहीं बेचा था; उसका घर पतरस के कारावास के समय महिलाओं की विशेष प्रार्थना सभा के लिए प्रयुक्त किया गया था (प्रेरितों 12:12)। कुछ वर्ष पश्चात मरासोन के पास भी यरूशलेम में अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति थी, और उसने पौलुस के साथ तीसरी मिशनरी यात्रा से आने वालों को अपने घर ठहराया था (प्रेरितों 21:16)।

इसलिए,मसीही लोगों का साम्यवादी विचारधारा के अनुसार साझे का कुछ भी नहीं था। उन्हें किसी ने स्थानीय मण्डली के कोषागार में अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर एक

सर्वमान्य कोष पर निर्भर रहने के लिए नहीं कहा था। अध्याय 2 में पैदा हुई आवश्यकताएं कुछ देर या महीनों तक ही रहीं; और अध्याय 4 में पूरी होने वाली आवश्यकताएं भी ऐसी ही थीं। जब तक आवश्यकताएं पूरी न हो गईं तब तक मसीही लोगों ने अपनी सम्पत्तियों को बेचना जारी रखा।

यह परोपकार स्वेच्छा तथा मसीही प्रेम और अपने ज़रूरतमंद भाइयों की चिन्ता करने की इच्छा थी। ये दान भाईचारे और संगति के नये बन्ध की आत्मा में दिए जाते थे, और ऐसी असामान्य उदारता के बढ़ने का एकमात्र कारण मसीह में सबकी दिलचस्पी थी।

एक यहूदी नगर में इस प्रकार के परोपकार का कार्य इतना असामान्य और महत्वपूर्ण था कि लूका ने कहा कि ''उन सब पर बड़ा अनुग्रह था'' (प्रेरितों 4:33)। उनके आस-पास के लोग उनके इन कार्यों से हैरान रह गए होंगे। जब हनन्याह और सफीरा ने अपने दान के विषय में पवित्र आत्मा से झूठ बोला था और प्रभु की ओर से उन्हें मृत्यु दण्ड मिला था (उन्हें दण्ड पतरस ने नहीं, बल्कि प्रभु ने दिया था), तो सारी कलीसिया पर ही नहीं बल्कि ''सब सुननेवालों पर, बड़ा भय छा गया'' था (प्रेरितों 5:11)। परोपकार के कार्य को हल्केपन से लेने पर इन दो लोगों को मिले मृत्यु दण्ड का यरूशलेम में रहने वालों पर इतना प्रभाव पड़ा कि बहुत से लोग प्रेरितों की बातें सुनने के लिए सभाओं में नहीं आते थे (प्रेरितों 5:13); परन्तु प्रेरितों 5:14 कहता है, ''और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरुष और स्त्रियां प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।'' पुराने यहूदी विचारधारा वालों के लिए यह एक नया अनुभव था।

दूसरी घटना: ज़रूरतमंद विधवाएं

विधवाओं की आवश्यकता बनी रही, और सात पुरुषों (प्रेरितों को नहीं) की नियुक्ति से जो इस काम को कर सकते थे (प्रेरितों 6:1-6) अनियमितताएं दूर कर दी गईं। इस घटना से यरूशलेम के रहने वाले ही प्रभावित हुए। विधवाओं के इस स्नेहपूर्ण और सावधानीपूर्वक प्रबन्ध के वृत्तांत के तुरन्त बाद लूका ने लिखा कि चेलों की गिनती बहुत बढ़ने लगी यहां तक कि यहूदी याजकों में से बहुत से लोग मसीही बन गए (प्रेरितों 6:7)।

अधिकतर विद्वान इस घटना को अध्याय 2 में उल्लेखित पिन्तेकुस्त के अनुभवों के दो से तीन वर्ष बाद की बताते हैं। इस मामले में प्रेरितों की कोई पर्याप्त दूरदृष्टि नहीं थी, परन्तु दूसरे भक्त लोगों को सेवा में लगाने से बहुत से महत्वपूर्ण सिद्धांत बन गए थे।

पहला, सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात वचन को सिखाना है। दूसरा, ज़रूरतमंदों की सेवा करना आवश्यक तो है लेकिन सुसमाचार की शिक्षा देने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं। तीसरा, कलीसिया के भीतर ही परमेश्वर का भय मानने वाले योग्य पुरुषों तथा महिलाओं को काम दिए जा सकते हैं। चौथा, प्रत्येक मण्डली में इस प्रकार का कार्य करने वाले पुरुष तथा महिलाएं उपलब्ध हैं। पांचवां, जब कलीसिया अपने बीच में ही लोगों की शारीरिक आवश्यकताओं की ओर ध्यान देती है तो इसका प्रभाव समाज पर अवश्य होगा। छठा,

यह उदाहरण प्रभु की सेवा अच्छी तरह से करने की इच्छुक प्रत्येक मण्डली के लिए एक अच्छे नमूने की तरह है।

तीसरी घटना:
ज़रूरतमंद कलीसियाएं

अगबुस नाम के एक नबी ने पूरे संसार में आने वाले एक अकाल की भविष्यवाणी की (प्रेरितों 11:28) और लूका ने लिखा कि यह अकाल क्लौदियुस कैसर के समय पड़ा। क्लौदियुस कैसर के समय चार अकाल पड़े; तीन ने तो रोम और यूनान को प्रभावित किया, और एक ने फलस्तीन को। यहूदिया में अकाल लगभग 45 ईस्वी में पड़ा था, जिससे पता चलता है कि यह घटना कलीसिया के आरम्भ से बारह से अधिक वर्षों बाद घटित हुई।

अन्ताकिया के भाइयों ने शीघ्रता से बात मान ली और यरूशलेम में पड़ी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उदारता से दान दिया (प्रेरितों 11:30)। मण्डली के काफी लोगों ने सहायता करने के दायित्व को स्वीकार किया कि लूका ने अन्तर्भूत शब्द ''उन्होंने'' का प्रयोग किया। उनमें से प्रत्येक सदस्य ने जितना वह दे सकता था, दान दिया और परमेश्वर के संगठन के प्रति मण्डली का सम्मान इस तथ्य में दिखाया गया कि धन प्राचीनों के पास भेजा गया। कोई कह सकता है कि यह धन ''प्रेरितों के पांवों में'' रखा गया था। कोई इसे कैसे भी व्यक्त करे, धन तो यरूशलेम में अन्ताकिया के भाइयों के पास ही भेजा गया था, परन्तु यह संकेत मिलता है कि बांटने का काम प्रेरितों के हाथ में ही था। दो महान प्रचारकों बरनबास और शाऊल ने इन दानों को बांटने में सहायता के लिए शिक्षा देने के अपने काम को थोड़ी देर के लिए टाल दिया (प्रेरितों 11:30)।

यहूदी मसीही अभी यहूदियों को छोड़ किसी और को सुसमाचार सुनाने से झिझक रहे थे (प्रेरितों 11:19), यद्यपि कइयों ने बड़ी सफलतापूर्वक सूरिया के अन्ताकिया में जाकर अन्यजातियों में सुसमाचार सुनाना आरम्भ कर दिया था (प्रेरितों 11:20)। यरूशलेम के भाइयों ने बरनबास को नये सदस्यों की सहायता के लिए भेजा था, और इस कार्य में सहायता के लिए बरनबास ने पौलुस को भर्ती कर लिया (प्रेरितों 11:21-26)। पौलुस और बरनबास ने अन्ताकिया में एक से अधिक वर्ष तक काम किया, और यहूदियों और अन्यजातियों की मिली-जुली प्रभु की कलीसिया की यह पहली मण्डली थी जिसमें ''मसीही'' शब्द का इस्तेमाल हुआ था। शायद यह महत्वपूर्ण है कि ''मसीही'' शब्द तब तक के लिए सुरक्षित रखा गया था जब तक मण्डलियों में सुसमाचार की सार्वभौमिकता की पहचान न हो जाती और यह व्यवहार में न लाया जाता।

पौलुस ने बाद में रोम के भाइयों से यहूदिया के परोपकार में सहायता का आग्रह किया (रोमियों 15:26, 27) क्योंकि रोम के यहूदी भाइयों ने सुसमाचार सिखाकर रोम के गैर यहूदी भाइयों की सहायता की थी, पौलुस ने संकेत दिया कि यह अन्यजाति भाइयों का ही कर्त्तव्य था कि वे यहूदिया में अपने यहूदी भाइयों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा

करें। परोपकार के कार्य का अत्यधिक आत्मिक प्रभाव भी हो सकता है!

चौथी घटनाः
फिर से ज़रूरतमंद कलीसियाएं

पौलुस तीसरी मिशनरी यात्रा पूरी करके यरूशलेम को लौट गया। मन्नत पूरी करने के लिए जाने वाले चार लोगों के साथ जाने (और उनका खर्चा उठाने) के प्राचीनों के आरोप से यहूदियों को लगा था कि वह त्रुफिमुस नामक इफिसुस वासी एक अन्यजाति को साथ ले गया था (प्रेरितों 21:17-29)। उसे गिरफ्तार करके कैद करने के बाद कैसरिया में भेज दिया गया था। वहां वह राज्यपाल फेलिक्स (प्रेरितों 23:24) और महायाजक हनन्याह के सामने पेश हुआ (प्रेरितों 24:1)। तिरतुल्लस नामक वकील ने जिसे वे पौलुस को सज़ा दिलाने में सहायता के लिए यरूशलेम से लाए थे, पौलुस पर विद्रोह का आरोप लगाया (प्रेरितों 24:2, 5)।

इस आरोप का कि पौलुस ने रोम के विरुद्ध विद्रोह करने वालों का नेतृत्व किया था, पौलुस ने उत्तर दिया कि बारह दिन पहले ही वह यरूशलेम से अपने लोगों के लिए चन्दा तथा भेंटें लेकर आया था (प्रेरितों 24:11, 17)। उसने खोलकर समझाया कि वह किसी विद्रोह की अगुआई नहीं कर रहा था बल्कि अपने लोगों में ज़रूरतमंदों के लिए धन इकट्ठा करके सहायता कर रहा था। इसके अलावा, यरूशलेम में विद्रोह भड़काने के लिए पांच दिन का समय कुछ भी नहीं था।[1]

यरूशलेम में लाए जाने वाले दान तथा भेंटों की बात करके, पौलुस ने उस चन्दे का हवाला दिया जो कई वर्षों तक के लिए परोपकार के कार्य के लिए रहा। पौलुस ने इस आवश्यकता के बारे में और इसे पूरा करने के बारे में गलतिया की कलीसियाओं की तरह कुरिन्थुस की कलीसिया को भी लिखा (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। एक वर्ष बाद, पौलुस ने कुरिन्थियों को अपने प्रयास को पूरा करने के लिए कहते हुए (2 कुरिन्थियों 8:10-12; 9:3-5) उन्हें इस दान में अपने प्रण को याद दिलाया था (2 कुरिन्थियों 9:1, 2)। धन को संचालित करने में किसी भी प्रकार की आलोचना से बचने की कोशिश में, पौलुस ने उनके प्रतिज्ञा किए हुए दानों को पूरा करने में सहायता के लिए तीतुस के साथ एक और भाई को भेजा (2 कुरिन्थियों 8:16-24)।

तीसरी मिशनरी यात्रा में एशिया, अखया, मकिदुनिया से लौटते हुए, पौलुस के साथ सात लोग थे (प्रेरितों 20:4, 5)। इन लोगों ने दान तथा भेंटें जो कि अधिकतर सोने और चांदी के सिक्कों के रूप में थीं, ले जाने में पौलुस की सहायता की। ये चन्दे कम से कम दो वर्षों तक पड़े रहने थे, इसलिए पौलुस के लिए इन भारी थैलों को स्वयं या एक या दो साथियों के सहयोग से भी सम्भालना कठिन होना था। इस यात्रा के दौरान पौलुस के विरुद्ध एक षड्यन्त्र रचा गया, शायद यह षड्यन्त्र एकत्र हुए धन को चुराने के लिए था (प्रेरितों 20:3)। परन्तु पौलुस ने अपने साथियों को जहाज़ पर छोड़कर थल मार्ग से त्रोआस

से अस्सुस जाकर एक और ही असाधारण बात की (प्रेरितों 20:13, 14)। शायद रास्ते में लुटेरों को चकमा देने के लिए यह दांव प्रयोग किया गया हो ।

इस मिशनरी यात्रा के दौरान, पौलुस ने 2 कुरिन्थियों लिखा जिसमें दान के लिए की गई प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए उपदेश भी शामिल हैं। पौलुस ने इस यात्रा के दौरान रोमियों के नाम पत्र भी लिखा, और उसने यरूशलेम के संतों की सेवा की आवश्यकता का उल्लेख भी किया (रोमियों 15:25, 26)। इसलिए, हम लगभग 58-59 ई. में कलीसिया में परोपकार की एक और घटना देखते हैं।

सारांश

प्रेम भरा परोपकार आरम्भिक कलीसिया की मुख्य विशेषताओं में से एक बन गया था। हर एक मण्डली अपनी स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने की ज़िम्मेदारी लेती और पूरा करती थी। मसीही लोग दूसरे स्थानों के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार रहते थे। पहली शताब्दी आम तौर पर निर्दयी और कठोर थी, परन्तु मसीही लोग भाइयों की हर प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए खड़े हो जाते थे।

मसीही लोगों को निजी तौर पर भलाई करने के कई अवसर मिल सकते हैं (गलतियों 6:10), परन्तु मण्डलियों के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियां खत्म नहीं हो जातीं। मसीही लोग आज कलीसिया के संगठन के रूप में होने वाले कार्य के लिए उदारता से लगातार चन्दा दे सकते हैं परन्तु व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना भी किया जा सकता है। प्रभु ने अपनी कलीसिया की योजना अपने परोपकारी समाज के रूप में बनाई थी और प्रत्येक मण्डली पर्याप्त रूप से उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की सामर्थ रखती है।

आरम्भिक मसीही प्रभु की इस इच्छा को पूरा करते थे ताकि उन्हें परमेश्वर और एक दूसरे से प्रेम करने वाले लोगों के रूप में जाना जाए (यूहन्ना 13:34, 35)। जे. डब्ल्यू मैक्गार्वे ने कहा, ''पूरे मन से निकलने वाले परोपकार से बढ़कर अर्थपूर्ण प्रचार कोई नहीं है।''[2]

पाद टिप्पणियां

[1]पौलुस के बारह में से दो दिन यात्रा में (प्रेरितों 23:31-32) और पांच दिन हनन्याह के यरूशलेम से आने की प्रतीक्षा में लग गए थे (प्रेरितों 24:1), जो कि निश्चित रूप से विद्रोह के लिए काफ़ी समय नहीं था। [2]जे. डब्ल्यू., *न्यू कमैंट्री ऑन द ऐक्ट्स ऑफ़ अपोस्टल्ज़।*